करता है। तमोगुण से मोहित जीव प्रमत्त हो उठता है; जो प्रमत्त है, उसे कभी वस्तुज्ञान नहीं हो सकता। उत्थान के स्थान पर उसका पतन ही होता है। वैदिक शास्त्रों में तमोगुणी जीव का लक्षण यह बताया गया है कि उसे तत्त्वज्ञान नहीं हो सकता। उदाहरणार्थ, कोई भी व्यक्ति देख सकता है कि उसके पितामह की मृत्यु हुई है और इसी भाँति एक दिन वह भी काल का ग्रास बनेगा, क्योंकि मनुष्यमात्र मरणशील है। जिन बालकों को वह जन्म देता है, वे भी मरेंगे। मृत्यु अवश्यम्भावी है। फिर भी, लोग सनातन आत्मा की उपेक्षा करते हुए धनोपार्जन के लिए दिन-रात अथक परिश्रम में रत हैं। यह प्रमाद है। प्रमत्तता में वे पारमार्थिक ज्ञान के विकास से सर्वथा विमुख हो रहे हैं। इस कोटि के मनुष्य अत्यन्त आलसी होते हैं। यदि उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान के लिए सत्संग में निमन्त्रित किया जाय तो वे उसमें रुचि नहीं लेते। वे तो रजोगुणी के समान क्रियाशील भी नहीं हैं। तमोगुणी व्यक्ति का एक लक्षण यह है कि वह आवश्यकता से अधिक सोता है। छः घण्टे की निद्रा स्वस्थ मनुष्य के लिए पर्याप्त है; परन्तु तमोगुणी मनुष्य दिन में कम से कम दस-बारह घण्टे सोता है। ऐसा मनुष्य सदा विषादमग्न दिखाई देता है। मादक द्रव्यों और निद्रा का तो मानो उसे व्यसन सा होता है। ये सब तमोगुण में बँधे मनुष्य के लक्षण हैं।

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत।।९।।

सत्त्वम्=सत्त्वगुण; **सुखे**=सुख में; **संजयति**=आसक्त करता है; **रजः**=रजोगुण; **कर्मणि**=कर्म में; **भारत**=हे अर्जुन; **ज्ञानम्**=ज्ञान को; **आवृत्य**=ढक कर; **तु**=किन्तु; **तमः**=तमोगुण; **प्रमादे**=प्रमाद में; **संजयति**=बाँधता है; **उत**=ऐसा कहा गया है।

अनुवाद

सत्त्वगुण सुख की आसक्ति से बाँधता है, रजोगुण सकाम कर्मों से बाँधता और तमोगुण प्रमाद से बाँधता है।।९।।

तात्पर्य

सत्त्वगुण में स्थित पुरुष दार्शनिक, वैज्ञानिक अथवा शिक्षावित् जैसे अपने विशिष्ट कार्य अथवा बौद्धिक वृत्ति में सन्तोष करता है। रजोगुणी सकाम कर्म में आसक्त रहता है। वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार अधिक से अधिक धन कमा कर उसे सत्कार्यों में लगाता है। कभी-कभी वह औषधालय भी खोलता है तथा दातव्य संस्थाओं को दान देता है। ये सब लक्षण रजोगुणी के हैं। तमोगुण तो ज्ञान को ढक ही देता है। अतः तमोगुणी जो भी कर्म करे, उससे न तो उसका शुभ होता है और न किसी दूसरे का ही भला होता है।

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।।१०।।

रजः=रजोगुण; **तमः**=तमोगुण को; **च**=भी; **अभिभूय**=दबाकर; **सत्त्वम्**